हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम....

(आत्म-कीर्तन)

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता-दृष्टा आतमराम।
मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहाँ राग वितान॥1॥

मम स्वरूप है सिद्धसमान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान।
किन्तु आश वश खोया ज्ञान, बना भिकारी निपट अजान॥2॥

सुख-दुःख दाता कोई न आन, मोह-राग-रुष दुःख की खान।
निजको निज पर को पर जान, फिर दुःख का नहीं लेश निदान॥3॥

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्याग पहुँचूँ निजधाम, आकुलता का फिर क्या काम॥4॥

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, ज्ञायकभाव लखूँ अभिराम॥5॥